पब्लिक ट्रांसपोर्ट कम होने से जान पर खेलकर सफर करते हैं छात्र

अधिक कमाई के लिए निजी वाहनों के चालक तेज रफ्तार में ड्राइविंग करते हैं और क्षमता से अधिक सवारियां बैठाते हैं

■ सुधीर कुमार, ग्रेटर नोएडा

यमुना एक्सप्रेसवे पर तेज रफ्तार दौड़ती कैब में सफर करना छात्रों की मजबूरी बन गई है। ग्रेनो से आगे दनकौर के पास बनी 2 यूनिवर्सिटी तक जाने के लिए पब्लिक ट्रांसपोर्ट की हालत बेहद खराब है। इस रूट पर सुबह और शाम 2-2 बसें ही चलती हैं, जिनका स्टूडेंट्स को कोई फायदा नहीं होता है। ऐसे में इन छात्रों के पास कैब का सिवा कोई विकल्प नहीं बचता है। ऐसे वाहन चालक में अधिक से अधिक चक्कर लगाने के लिए तेज रफ्तार और क्षमता से अधिक सवारी ढोते हैं। यहां गुरुवार को हुए हादसे की जांच में पता चला है कि गाड़ी में 7 के बजाय 10 लोग सवार थे।

यमुना एक्सप्रेसवे पर गुरुवार को हुए हादसे की जांच में पता चला है कि वैन में 7 के बजाय 10 लोग सवार थे

यूपी रोडवेज व अथॉरिटी शहर में ट्रांसपोर्ट सिस्टम को मजबूत करने के लिए करोड़ों निवेश करने के बाद भी लोगों को अच्छी ट्रांसपोर्ट की सुविधा नहीं दे पा रही है। यहां तक की ग्रेनो रोडवेज डिपो को कुछ महीने पहले 84 बसें मिली हैं। इनको बाहर के रूट पर चला दिया गया। लिहाजा शहर के लोगों को बसों की कमी खल रही है। मजबूरी में लोग नोएडा से ग्रेनो के लिए टाटा मैजिक, ईको वैन, ऑटो और प्राइवेट टैक्सी का सहारा ले रहे हैं। इसका नतीजा यह है कि सड़क हादसे बढ़ रहे हैं।

पुलिस व आरटीओ की अनदेखी है हादसों की वजह : नोएडा-ग्रेनो और यमुना एक्सप्रेसवे पर ऑटो व ईको वैन से लेकर तमाम वाहन टैक्सी में चल रहे हैं। आरोप है कि आरटीओ व पुलिस की मिलीभगत से ये वाहन अवैध रूप से दौड़ रहे हैं। यहां तक कि कंपनियों में लगी कैब भी सुबह शाम स्टाफ को छोड़ने के बाद दोपहर में सवारियों को ढोने में लग जाती हैं। कंपनी के स्टाफ की शिफ्ट छूटने से पहले ये जल्दी के चक्कर में वाहनों को तेज स्पीड से चलाते हैं। अवैध रूप चलाने के कारण इनका किराया बस से भी कम होता है और जल्दी पहुंचा देते हैं। लिहाजा लोग इनमें सफर करते हैं।

परी चौक पर निजी कैब के लिए इस तरह मचती है अफरा-तफरी

नोएडा व ग्रेनो मिलती हैं कैब : नोएडा के बॉटनिकल गार्डन के पास से ये कैब और ईको वैन मिल जाती हैं। हादसे का शिकार हुए छात्रों को भी यहां 45 रुपये किराये के हिसाब से बैठाया गया था। अगर ये बस से आते तो करीब 50 रुपये में परी चौक ही पहुंचते। परी चौक से उन्हें 50 से 100 रुपये में ऑटो हायर करना पड़ता, क्योंकि डायरेक्ट बस सेवा नहीं है। इसी तरह परी चौक के पास भी ये वैन मिलती हैं। इनके अलावा निजी यूज के लिए ली गई कारों से भी लोग सवारियां ढो रहे हैं। इन्हें रोकने वाला कोई नहीं है।

बसों की टाइमिंग गलत : ग्रेनो से जेवर-दनकौर के रूट पर सुबह-शाम 2-2 बसें चल रही हैं। बसों की टाइमिंग ऐसी है कि कॉलेज व यूनिवर्सिटी के छात्रों को इसका फायदा नहीं होता है। यमुना अथॉरिटी ने शहर के लोगों के लिए यमुना सारथी बस सेवा शुरू की थी, लेकिन बाद में परमिट की दिक्कतों के चलते यह बंद हो गई।

> मैं नोएडा सेक्टर-128 से हर रोज ग्रेनो स्थित जीआर ग्लोबल स्कूल जाता हूं। यूपी रोडवेज बस की तुलना में ईको वैन जल्दी पहुंचा देती है। किराया भी कम लगता है। –अमित, स्टूडेंट

> ग्रेनो से हर रोज साहिबाबाद जाना पड़ता है, जिसमें 100 रुपये किराए में खर्च हो जाते हैं। किराया बचाने के लिए सेक्टर-37 तक प्राइवेट वाहनों का इस्तेमाल करता हूं। – आकाश भाटिया

> मैं दिल्ली एम्स से हर रोज नॉलेज पार्क आता हूं। नोएडा सेक्टर-37 से आने में ईको वैन में 20, यूपी रोडवेज में 27 और एनएमआरसी की बस में 47 रुपये लगते हैं। – गौरव, स्टूडेंट

> मैं दिल्ली यूनिवर्सिटी में पढ़ता हूं। यूपी रोडवेज बस रुक-रुककर चलती है। ऑटो व टैक्सी परी चौक से सवारी भरकर सीधे नोएड़ा उतारती है, जिससे समय बचता है। – अरमान, स्टूडेंट